Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP)
Post Box No: 10217, Sinamangal, Kathmandu-09, Nepal
Phone/Fax No: 00977-1-4110924, Email: nenapinresearch@gmail.com

ISBN 993711697-X
9789937116978

# The Global Dimensions of Gandhian Thoughts



Editor
Deepak Kumar Adhikari

# The Global Dimensions of Gandhian Thoughts

*A Report of a Webinar*

On the occasion of 151st Birth Anniversary of Mahatma Gandhi

**Held**
**on**
Thursday, 15th Ashwin 2077 (1st October 2020)

**Venue**
Ambassador Hotel
Lainchaur, Kathmandu

**Organized by**

Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP)

# The Global Dimensions of Gandhian Thoughts

*A Report of a Webinar*

On the occasion of 151st Birth Anniversary of Mahatma Gandhi

**Editor**
Deepak Kumar Adhikari

**Published by**

Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP)

**ISBN:** 978-9937-1-1697-8

**Edition:** **First, 2022**

**Copies:** 1000

**Layout:** Santosh Acharya

*Copyright © Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP)*

*All rights reserved. No parts of this publication may be re/produced, transmitted, or stored in a retrieval system, in any form or by any means, without permission in writing from Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal.*

**Youtube video link**

*https://www.youtube.com/watch?v=mqE8dDJmQWY*

**Distributor**

Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal

**Printed at**

Nepal Printing Support, Anamnagar # 01-5706821

# Table of Contents


**Dr. Tikaram Poudel** **7-8**
Assistant Professor, Kathmandu University

**Vinay Mohan Kwatra** **9-13**
His Excellency Indian Ambassador to Nepal

**Pradeep Kumar Gyawali** **14-16**
Honorable Minister of Foreign Affairs (MoFA) and
Senior Leader United Marxist Leninist (UML)

**Dr. Sundar Mani Dixit** **17-23**
Senior Physician, Civil Society Leader

**Rajendra Mahato** **24-26**
Former Minister of Health and Population and
Senior Leader, Janata Samajwadi Party (JSP)

**Prakash Man Singh** **27-30**
Former Deputy Prime Minister and
Senior Leader, Nepali Congress (NC)

**Dr. Vijay Chauthaiwale** **31-33**
In-Charge, Foreign Affairs Department
Bharatiya Janata Party (BJP), India

**Deepak Kumar Adhikari** **34-36**
Director, Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP)

**Dr. Tikaram Poudel**

Namaskar,

We are very much thankful to Honorable Minister for Foreign Affairs, Government of Nepal, Shri Pradeep Kumar Gyawaliji, for being the Chief Guest of this program. Shri Gyawali is joining online from Kathmandu. We are very much thankful to you Sir for being with us. We are also thankful to His Excellency Ambassador of India to Nepal, Shri Vinay Mohan Kwatraji. You are very much welcome to this program, Sir. We are also very much thankful to Dr. Sundar Mani Dixit (Senior Physician and Civil Society Leader of Nepal). We are very much obliged to have your presence here, Sir. We are also very much thankful to Shri Rajendra Mahato, senior leader of Janata Samajbadi Party and also former Minister Government of Nepal for being with us here.

Similarly, I welcome Shri Prakash Man Singh, leader of Nepali Congress and former Deputy Prime Minister, Government of Nepal. We are very much happy to have you here, Sir. We are also very much happy to have with us Dr. Vijay Chauthaiwale. Dr. Chauthaiwale is the in-charge of Foreign Affairs Department of Bharatiya Janata Party (BJP). This program was possible only because of hard working Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal (NeNAP) Director Shri Deepak Kumar Adhikariji. I also welcome Shri Adhikari to this event. Thank you very much !

Today, we are celebrating the 151$^{st}$ birthday of one of the greatest leaders of the 20$^{th}$ century of Shri Mohandas Karamchand Gandhi. He

is more intimately known as 'Mahatma' and 'Bapu' because of his love for humanity. As a student of social sciences and political theory, I used to study Gandhism, may be around 1986-87 when I was a student of Humanities and Social Sciences at the University of Manipur, India. Since then Gandhiji has influenced me through the idea he provided for the way of living and working together forever.

One important thing in Gandhiji was that he always sided with the marginalized people, whom he called Harijans. As a leader, he was such a man that nobody was dissatisfied with him. Recently I was reading a book on history of Indian National Movement. I found Gandhiji was a person who was able to guide and nurture some of the leaders and these leaders were inspiring to the next generation. Whether talk about Nehru or Sardar Vallava Bhai Patel or of Hardya Desai or Rajya Gopal Sarai, all these people led the nation after Gandhiji in such a way that and it makes us proud not only as Indian but as a South Asians. We have many eminent people to talk about Gandhiji today, and we have very senior political leaders who were always inspired by his ideology. I welcome every dignitary here. Thank you all for being a part of this program. I request Shri Vinay Mohan Kwatraji, His Excellency the Ambassador of India to Nepal to highlight his views on Gandhian philosophy.

**Vinay Mohan Kwatra**

नमस्कार,

सर्वप्रथम मैं नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान, नेपाल (नेनाप) को इस कार्यक्रम की आयोजना के लिए धन्यवाद करता हूँ। माननीय विदेश मन्त्री श्री प्रदीप कुमार ज्ञवाली जी, जो आज हमारे साथ जुम के माध्यम से उपस्थित हैं, श्री राजेन्द्र महतो जी, प्रकाशमान सिंह जी, डा. सुन्दरमणि दीक्षित जी, विजय चौथाइवाले जी तथा इस वेबिनार में सम्मिलित अन्य सभी गणमान्य अतिथिगणों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

महात्मा गान्धी जी की एक सौ ५१ वीं जन्मजयन्ती की पूर्वसन्ध्या पर ये जो कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है इसके लिए नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान, नेपाल का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

मैं शुरू करना चाहुँगा एक क्षमा याचना से। और यह क्षमा याचना इसलिए कि मेरा व्यक्तिगत मानना यह है कि गान्धी जी का जीवन हो, उनकी जीवनी हो, जीवनशैली हो, सोच हो, दर्शन हो, कर्मठता हो, उनके व्यक्तित्व एवं चरित्र की गहनता इतनी है कि उसकी किसी भी बात पर टिप्पणी करने में मैं अपने आपको असक्षम और अयोग्य मानता हूँ। मुझे नहीं लगता है कि मैं व्यक्तिगत रूप से उनके बारे में कुछ कह सकता हूँ। लेकिन विदेश सेवा के कार्यकाल में कुछ ऐसे व्यक्तिगत अनुभव हुए हैं जिनके द्वारा गान्धी-जीवनी का एक भाव प्रत्यक्ष रूप से सामने आया जो एक प्रकार से, मूलभूत रूप से वैश्विक ही है, और आज का शीर्षक "गान्धी विचार का वैश्विक आयाम" से जुडा हुआ है।

जब वैश्विक आयाम के मुद्दों की बात आती है तो मैं उस मुद्दे के बारे में बात करना चाहुँगा जिससे गान्धी जी का राजनैतिक तथा व्यक्तिगत चरित्र निर्माण में बहुत बडी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी और वो वैश्विक परिप्रेक्ष्य १९ वीं शताब्दी तक जाता है । वो था रङ्गभेद की नीति के विरोध में, जो एक वैश्विक आन्दोलन हुआ । उसको लेके, जिसमें गान्धीजी का योगदान था, जिसकी वजह से उनके चरित्र में परिवर्तन आया । जो कि एक प्रकार से बाँकी सोच विकसित होने का मूलभूत आधार बना– जिसका सन्दर्भ आज के वैश्विक आयाम से है । बात १०० साल से भी ज्यादा पुरानी है । सन् १९ वीं सदी की बात है । ७ जून १८९३ दक्षिण अफ्रिका में एक जगह है उसका नाम है डरबन । और डरबन से एक घण्टा दूर एक दूसरी जगह है पीटरमारिट्जबर्ग । ७ जून १९९३ को जो मैं कह रहा हूँ वो नयाँ नहीं है । ये कई जगह लिखा गया है । मगर मैं यहाँ इसलिए कह रहा हूँ कि एक समय ऐसा था सन १९५७ में कि, मुझे इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति हुई थी । मैं उसका जिक्र बाद में करुँगा । ७ जून १८९३ को गान्धी जी डरबन स्टेशन से ट्रेन पकडते हैं । उस समय वो एक वकिल थे । वकालत के क्लाइन्ट सिलसिले में साउथ अफ्रिका में एक साल के कांन्ट्रैक्ट में गए थे । डरबन से प्रिटोरिया की ट्रेन थी । जून का महिना था । इस समय साउथर्न हेमिस्फीयर में सर्दी का मौसम होता है । जून में पीटरमारिट्जबर्ग स्टेशन पर जब ट्रेन पहुँची तो गान्धी जी के पास फस्ट क्लास का टिकट था । लेकिन फस्ट क्लास का टिकट होने के बाबजुद भी उनको टिकट कन्डक्टर के कहने पे अपने कम्पार्टमेन्ट से बाहर निकाल दिया गया क्योंकि वे स्वयं अपनी इच्छा से उतरने को तयार नहीं थे । वो रात गान्धी जी ने पीटरमारिट्जबर्ग रेलवे स्टेशन पर वेटिङ्ग रूम में पुरी रात सर्दी में बिताई । ये वो दिन था जब मैं कहूँगा कि पीटरमारिट्जबर्ग जो एक रेलवे स्टेशन से एक प्रकार से तीर्थस्थल में परिवर्तित हुआ । क्योंकि ये वह जगह थी, जहाँ से मोहनदास करमचन्द गान्धी की 'महात्मा गान्धी' बनने की जो यात्रा थी, जो मानव कल्याण की यात्रा थी, वहाँ से इसका प्रारम्भ हुआ । यह कई बार पहले भी कहा गया है कि जो व्यक्ति उस स्टेशन पे घेरा गया, उतारा गया धक्के मार के, वो मोहनदास करमचन्द गान्धी था, भारतीय नागरिक था । मगर जो व्यक्ति अगले दिन वहाँ से उठा तो उसकी आत्मा में एक प्रभू-प्रकाश प्रवेश कर चुका था । आत्मानुभूति, जीवनका गन्तव्य स्पष्ट था । महात्मा बनने का जो यात्रा थी, वह यहीं से प्रारम्भ हुआ था ।

पीटरमारिट्जबर्ग स्टेशन को आज एक स्मारक के रूप में माना जाता है । मैं यह व्यक्तिगत रूप में इसलिए कह सकता हूँ कि जून १८९७ लगभग १०० साल के बाद डरबन से पीटरमारिट्जबर्ग की जो यात्रा की थी उसका re-enactment किया गया था जून १९९७ में । उस ट्रेन में, जो डरबन से चली थी, उस समय के दक्षिण अफ्रिका के राष्ट्रपति श्री नेल्सन मण्डेला थे, दक्षिण अफ्रिका में भारत के जो राजदूत थे, वो थे, डरबन में भारतीय काउन्सिल जनरल थी और उस काउन्सुलेट का एक छोटा सा अधिकारी विनय मोहन क्वात्रा के रूप में मैं था । उस समय पीटरमारिट्जबर्ग स्टेशन पर राष्ट्रपति मण्डेला ने जब भाषण दिया और उस समय हमारे राजदूत थे, उन्होंने भाषण दिया, उस समय मुझे यह अनुभूती हुइ कि १०० साल पहले जब मोहनदास करमचन्द गान्धी को रङ्ग भेद की नीति के कारण एक ईमोसनल वॉयलेंसका जो एक्सपेरियन्स हुआ जिसने उनकी महात्मा बनने की जो यात्रा शुरू हुई उससे समझ में आया कि अहिंसा और सत्य शब्द बहुत सरल है लेकिन उसका जो आम जीवन में मुख्य रूप से जो अनुसरण है वह सच में कठिन है ।

रङ्गभेद नीति के विरोध में जो विश्व की लडाई थी उस में गान्धी जी ने भारतीय नागरिक होते हुए भी दक्षिण अफ्रिकी नागरिकों के साथ मिलकर आन्दोलन छेड दिया । उनका यह वैश्विक आयाम को यदि आप देखें तो गान्धी जी का योगदान सच में एक व्यावहारिक योगदान था । यह केवल सोच का योगदान नहीं था । वो साथ में लडाई लडी हुई उसका योगदान था । यही कारण है कि जून २००७ में युनाइटेड नेसन जेनरल एसेम्ब्ली में एक सर्वसहमति से रेजोलुसन पास किया गया । जिसके अन्तरगत डिक्लरेसन किया गया कि एक 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के प्रस्ताव को मन्जुरी दी गई और यह भी घोषित किया गया कि २ अक्टोबर गान्धी जी का जन्म दिन है, उसी दिन को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में विश्व भर में मनाया जाएगा । इसके अलावा भी यु. एन. की काफी ऐसी संस्थाएँ थी जिसमें गान्धी जी की सोच को सम्मिलित किया गया । युनेस्को के अन्तर्गत इसका संविधान १९४५ में हस्ताक्षरित किया गया, उसमें भी महात्मा गान्धी जी के विचार प्रतिबिम्वित होते हैं । और इस युनेस्को का जो फन्डामेन्टल लिगल इन्स्ट्रुमेन्ट है उसकी मान्यता यही है कि युद्ध की शुरूवात, युद्ध का प्रारम्भ वह मानव के मस्तिस्क में होता है । इसलिए शान्ति की स्थापना का प्रयास भी मानव के मस्तिस्क से ही होना जरूरी है । पिछले वर्ष पूरे विश्व ने गान्धी जी की १५० वीं जयन्ती मनाई है । और पूरी दुनियाँ ने उन्हें सत्य और अहिंसा के प्रतीक

पुरुष के रूप में याद किया। इसका एक कारण यह भी है कि उन्होंने दुनियाँ को जो विचार दिया उन्ही विचारों को स्वयं भी आत्मसात् किया। जैसे कि मैंने कहा; केवल शाब्दिक अनुसरण नहीं था उन्होंने जीवन में आत्मसात् करके, वास्तविक जीवन में चरितार्थ करके गान्धी जी ने सत्य और अहिंसा के तथ्यों का पूरे विश्व को एक प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत किया। और उन्होंने कहा कि सत्य और अहिंसा कोई नई चीज नहीं है, यह तो मानवता के इतिहास से जुडी हुई है। उन्होंने जो कहा है उसको मैं यहाँ कोट करता हूँ, "I have nothing new to teach the world, truth and non-violence are old as the hills".

उनके विचार की जो गहराई थी उससे विश्व के कई नेता बहुत गहरे रूप से प्रभावित हुए। उनमें सम्मिलित हैं दक्षिण अफ्रिका के पुराने राष्ट्रपति नेल्सन मण्डेला, मर्टिन लुथर किङ्ग जुनियर तथा विश्व के अनेक नेता भी उस में शामिल हैं। नेपाल भी गान्धी जी के विचारों से अछुता नहीं है। उनके विचारों ने नेपाल के भी काफी लोगों को प्रभावित किया है। स्वर्गीय तुलसी मेहर श्रेष्ठ उनके ऐसे ही एक भक्त और विचारक थे जिन्होंने गान्धी जी के विचारों के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित किया था। गान्धी जी के विचारों ने विश्वस्तर पर राजनेताओं, नीति निर्माताओं, जनसामान्य तथा समाज के कई वर्गो को काफी गहरे रूप से प्रभावित किया।

हम सभी जानते हैं कि २०१५ में युनाइटेड नेसन ने एक दस्तावेज तयार किया जिसका शीर्षक था 'Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development.' उसमें यह भी कहा गया है– that we are determined to foster peaceful, just and inclusive societies which are free from fear and violence. There can be no sustainable development without peace and no peace without sustainable development.

स्थायी और दीर्घकालीन विकास ये मानव कल्याण के लिए जो सबसे बडी आवश्यकता है उस पर गान्धी जी के सिद्धान्तों की एक स्पष्ट और अमीट छाप इसमें दिखती है।

गान्धी जी ने यह भी वक्तव्य दिया था– जब मानव कल्याण के उद्देश्यों की पूर्ति, वैश्विक शान्ति, सामाजिक विकास, हिंसा के वातावरण से विश्व को मुक्त करने की बात आती है, इस प्रसंग में गान्धी जी का एक प्रसिद्ध वक्तव्य याद आता है। उन्होंने कहा था "There are many causes that I am prepared to die for, but no causes that I am prepared to kill for". वैश्विक स्तर पर तमाम दुविधाओं

के बीच अगर गान्धी जी का एक मात्र यही विचार भी अपना लिया जाए तो पुरी मानव जाति का कल्याण होने में कोई सन्देह नहीं रहेगा ।

गान्धी जी मानवता और प्रकृति के बीच में एक बहुत ही सन्तुलित जीवन की विचारधारा रखते थे । जो उनकी सोच थी वो मैं मानता हूँ कि उसका महत्व सार्वभौमिक है । उन्होंने कहा था The Earth has enough resources for our need, but not for our greed. मानव के लालच को धरती माता अपने गोद में नहीं ले सकती । यदि इस प्रसंग में आज हम देखे तो सारी दुनियाँ में स्थायी और दीर्घकालीन विकास की जो बात है Sustainable Development की जो बात की जाती है उसके विषय में गान्धी जी ने हमें बहुत पहले से ही आगाह किया था । आज हम सभी मानते हैं कि हमें केवल विकास नहीं बल्कि स्थायी और दीर्घकालीन विकास चाहिए । चाहे हित व्यक्तिगत हो, राष्ट्रीय हो, क्षेत्रीय हो, अन्तर्राष्ट्रीय हो, समाज के चहुमुखी विकास की बात हो, विश्व में शान्ति की स्थापना की बात हो, विश्व की आतंकवाद की बात हो, हिंसा तथा घृणात्मक सोच से मुक्त करने की बात हो, आतंकवाद के प्रति संघर्ष करने की बात हो, पर्यावरण सुरक्षा अथवा प्रकृति के आदर की बात हो । इन सभी वैश्विक मुद्दों पर, जो कि मानव कल्याण से एक घनिष्ट रूप से जुडे हुए हैं । मेरा मानना है कि गान्धी जी का जीवन, उनके दर्शन, उनकी जीवनी, उन की सोच, उन के सिद्धान्त सार्वभौमिक रूप से प्रासांगिक है, अर्थात् Universally Relevant है और सदैव रहेंगे । लोग बार-बार उनके विचारों की ओर लौट कर आते हैं क्योंकि उनके विचार सार्वभौमिक हैं ।

मार्टिन लुथर किंङ्ग का एक कथन है जो की गान्धी जी के विचारों की सार्वभौमिकता को प्रत्यक्ष रूपसे दिखाता है । वह बताना चाहुंगा । उन्होंने कहा था, "Mahatma Gandhi embodied in his life certain universal principles that are inherent in the moral structure of the Universe and these principles are inescapable as the Laws of Gravitation".

अन्त में, कार्यक्रम को आयाजित करने के लिए नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान, नेपाल को एक बार मैं फिर धन्यवाद करता हूँ । ऐसे कार्यक्रम एक माध्यम हैं न केवल पूरे विश्व के लिए गान्धी जी की सोच को परिचित कराने के लिए वल्कि यदि हो सके, भले ही अंश मात्र से ही उनके सिद्धान्तों का अनुसरण हो सके । मुझे इस प्रोग्राम में आमन्त्रित करने के लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ ।

धन्यवाद ।

**Pradeep Kumar Gyawali**

Namaskar,

Thank you Dr. Tikaram Poudel, Excellency Vinay Mohan Kwatra, Ambassador of India to Nepal, Nepali Congress leader Honorable Prakash Man Singhji, Janata Samajbadi Party leader Honorable Rajendra Mahatoji, Senior leader of Bharatiya Janata Party Shri Vijay Chauthaiwaleji, Distinguish panelists and distinguish participants ! Namaskar and good afternoon !

First of all, let me exchange my sincere thanks to Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal for organizing this webinar on the theme 'The Global Dimensions of Gandhian Thoughts' on the eve of the 151st birth anniversary of Mahatma Gandhi. I also thank you inviting me to share my thoughts on the given theme.

I am happy to know that this year 151st birth anniversary of Mahatma Gandhi is being celebrated worldwide. The birthday of Gandhiji is just a day away. It is quite befitting that we discuss Gandhian thoughts that have spread over the entire globe with a valuable message of peace and non-violence.

Distinguished participants ! I would like to begin with a famous quote of Mahatma Gandhiji, in which he says, "Power speaks softly; it has no reason to be sound". With his infringing conviction in truth, and through the strength he gained from truth, he led wonderfully the Independence Movement of India and freed India from colonialism.

The success of this movement and the way he adopted in this movement are the landmark events of the 20th century. His teachings are equally relevant today, and are inspiring millions of people all over the world. Mohandas Karamchanda Gandhi was given the title 'Mahatma' by the Nobel Laureate Rabindranath Tagore.

Mahatma, as we know, was a great soul, not an ordinary one, for he showed human being a path of peace and non-violence where prosperity and happiness thrives. This view is opposed to war and conflict that results into death, decay and degeneration. Gandhiji always campaigned for the weak, down trodden and helpless people. He wanted the human civilization to grow on the robust foundation of equality, rights and justice. He could not bear to see people oppressed or suppressed anymore. Power of arms never surpasses his moral and ethical values. He believed that by firm and resolute action with peaceful and non-violent means, the un-armed can defeat the armed. The weak can again more power than the strong and the moral force can beat you. It is love and care that matters more for any human relationship not force and injustice. He told a coward is incapable of exhibiting love; it is the prerogative of the brave. Throughout his life Gandhiji supported peace both at home and abroad, as reflected in his thoughts and actions. He hailed that lasting peace could never be achieved by means of violence or war. For him, peace leads to freedom, equality and justice. It is rare to see such a human being in the world with unremitting courage and robust determination to oppose injustice and cruelty, and the operation and misuse of state power.

India was undergoing painful sufferings and torture, but Gandhi reconciled it with a very simple strategy of non-cooperation and non-violence. He made the antique state power collapse terribly. He viewed everything in a gentle way, and that saved the world. Gandhiji's simple life style has remained exemplary for many people around the world. His handloom, his handmade cotton attires, wooden sandal, and attic mud house are all reflections of his simple and contented life. The simple thing about of his great thought was that the though itself was a message to the humankind, teaching how they can chain happiness in their life. Following a simple way of life, Gandhiji became a great

philosopher and leader with innumerable followers. He was in fact a great soul-really, a 'Mahatma'. The Mahatma was relentlessly in pursuit of truth, equating it with God. He believed that non-violence was the means to achieve truth, which was the end. This quest for truth has led him to the path of being a curator for human devotion and dignity. While joining any moment or struggle people very often tend to have some feeling of retaliation or revenge but it is an endless, never-ending process. If you retaliate then others will definitely retaliate. Then this cycle will never end. In that context, Mahatma Gandhi rightly pointed out that retaliation and revenge is not the solution. He told that an eye-to-eye confrontation only ends up; making the whole world blind. This is his famous quotation.

The ideals, principles and practices of Mahatma Gandhi, which became popular in the world, are of great relevance even in the world today, and this is marked by armament, conflicts, hegemony and dominance. As Excellency the Ambassador mentioned, Gandhi's contributions are truly recognized by the entire humanity, and the UN has declared Gandhi's birthday as the International Day of Non-violence to give a tribute to Mahatma Gandhi. This means, his teachings are relevant and have immense influence all over the world.

On the eve of Gandhi's 151st birth anniversary, I place my deep appreciation for his invaluable contributions to making the world peaceful, non-violent, and just where every human being could live with dignity and honor. Nepali people have deep respect and love for Mahatma Gandhi. Many Nepali leaders were inspired by his courageous life and our democratic transition has taken deep inspiration from the way Gandhiji adopted with non-violence and peaceful transition. These were equally relevant to Nepal as well. Though he is not with us today, Gandhiji's thoughts and ideas continuously guide humanity to create a better world.

With these words, I would like to pay my tributes to this great soul. I would like to exchange my sincere thanks to the organizer and wish every success of this seminar.

Thank you very much for paying attention.

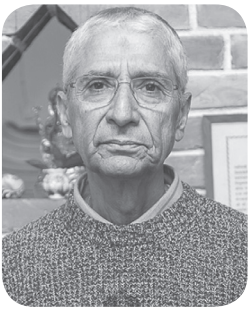

**Dr. Sundar Mani Dixit**

Namaskar,

Your Excellency and distinguished guests.

I will speak in English, because I know the audience has guest participants from India, and those from Nepal mostly understand the English language. Gandhiji was universal so I think I too should talk in the universal language. I am not quite used to this new webinar business as we have it today and I hope I am looking at the camera directly ! I don't know which way to look actually.

Today I feel highly honored to speak on Gandhiji. I could never imagine somebody would ask me to speak about him. I am a nothing, I am a nobody, and Gandhiji is something, a real somebody. I just don't understand how I am here, but since I am, I will pay my tribute to him.

My talk will be partly in a sense academic. Let me start off by saying that Gandhiji's frail figure in a loincloth and holding a staff was a physically deceptive form. Churchill called him the 'Naked Fakeer.' But that frail figure shook the world. He shook the Empire, in which the sun never set. Yes that was the Empire he shook ! We will now talk about the universal message of Gandhiji and examine how it was taken up by the world. But let me tell you one thing ! He is universal, his message has become universal. We all know about his influence on great icons like Nelson Mandela, Martin Luther King, Lech Walesa and Einstein.

I want to analyze how this was possible. How could a frail person in that simple form actually shake the world ? I want to talk about that a bit.

Gandhiji, as that frail mortal figure, could do nothing. Gandhi's spirit was the thing that mattered, the spirituality in him. Gandhiji realized the strength of the *Dharma* of his land right at the beginning. That *Dharma* was the Eternal religion, the *Sanatan Dharma*, which strengthened him. The *Sanatan Dharma* inside him was giving him that moral and ethical strength. He tapped the cosmic energy pointed to by the Vedas and Vedanta. No ordinary man could do what Gandhiji did. It was this cosmic energy which permeated his mission. His whole life was based on the basic philosophy of *Sanatan Dharma*: *Tyaag* and *Tapasya, Aparigraha* and *Ahimsa*, strength in the spirit and steadfastness in truth, love and forgiveness — he used all these weapons. He tapped the universality of the Vedic Dicta like *Aham Bramhasmi, Pragyanam Bramha* and *Tattvam Asi*. That universal concept became his being. When you touch cosmic consciousness you touch every single person in this world and all creation. That *Dharma* was Gandhiji's foundation.

That's why his message has gone throughout the world with such impact. This is what I want people to understand. This was the spiritual Gandhiji which came out of that frail form, the real universal being.

Now about India's freedom movement, I must tell you that I think Gandhiji's part in the freedom movement of India was not the main goal of his life. His main goal was his innate desire for universal *Moksha*— freedom of the soul, for every man, woman and child on this earth. This naturally manifested as freedom from all bondages of body, mind and spirit.

You see, the *Sanatan Dharma* tells you that the innate feeling inside every single person or every single being is to strive for freedom of the body and soul. It is as though the Infinite, the Eternal is caged in our body and wants to get free. That is what Gandhiji was for; he was for freedom of the soul and that freedom of the soul that he was attempting to ensure became manifest in his mission to ensure freedom from every bondage on earth, from slavery and suppression, religious intolerance, persecution and social atrocities. All round economic and social freedom also became essential elements in the political struggle for freedom of India. India's freedom could never have come without this inner strength where "*Moksha* is my birth-right", became the basis

just as Tilak said—"freedom is my birth-right" What India gained as political freedom was an offshoot of this broad struggle, it was not the main target but what an offshoot, it became !

When we talk about Gandhiji and the freedom movement we cannot and must not forget Swami Vivekananda. He was the person who aroused the soul of India — the Indian soul which was oppressed, suppressed, and buried for centuries, to rise again. The Indian had come to believe that he was a nothing, that he was a slave ! It was Vivekananda, who gave a wake-up call to the sleeping lion and gave back the dignity of manhood to India.

Swami Vivekananda said, “Get up ! Be what you truly are ! You are *Amritasya Putrah*– you are the children of God, the sharers of immortal bliss, holi and perfect beings.” He asked the Indian to wake up. He galvanized the broken soul of India into the mighty power that it was. That individual awakening that Swami Vivekananda brought about from every single Indian was mobilized by Gandhiji. This we must understand. Without the spiritual might of Swami Vivekananda this awakening of the spirit of every single Indian would not have been possible. Gandhiji would not have been a success alone. The genius of Vivekananda was effectively harvested by Gandhiji who used it in such an effective manner with the weapons based on the *Dharma* of the land. The weapon was "Civil Disobedience": *Satyagraha* !

James Henry Thoreau of America first used the term 'civil disobedience' in a lecture in 1848. In that lecture he described the ideas of civil disobedience. Thoreau's this lecture went ultimately into a compilation of his essays. Gandhiji somehow got hold of this in South Africa and he immediately understood its value and mentioned it in his paper "The Indian Opinion". He quoted many of those terms from James Henry Thoreau. He turned that term ‘civil disobedience’ into *Satyagraha*. *Satyagraha* was based on Thoreau's *Civil Disobedience*. However *Satyagraha* the word was based on the nation's *Dharma*. *Satyagraha* — the force of the soul ! Truth and firmness of purpose. Gandhiji was a genius because he based his calls around the core of the *Dharma* of his land, which naturally affected even the simplest of the simple of persons.

The term *Satyagraha* must be understood properly. Gandhiji realized that civil disobedience could become criminal disobedience if it was not also combined with one other principle: *Ahimsa*, yet another core component of our sub-continent's *Dharma*. So he combined *Satyagraha* and *Ahimsa* together. He made them into a compound; you could not separate one from the other. If you separate one from the other you could have criminal disobedience. You see today everyone uses the term *Satyagraha*. Anybody going on protest is said to be on *Satyagraha*. *Satyagraha* is not such a simple cheap term, you cannot denigrate it. *Satyagraha* means non-violence in *Tan, Man, Vachan*— body, mind and speech. All these need to be absolutely non-violent. You do not speak evil of your opponent; you do not retaliate. You do not even think of evil for your opponent. In fact Gandhiji went to the extent to say love your opponent ! His idea was to change the mindset of the opposition into the beneficial mode. If you start *Satyagraha* and criticize the opponent then the people who support you use your speech and go on to the street and start pelting stones at one another and the police. That is not *Satyagraha*, you can't call that *Satyagraha*. That *Satyagraha* is not *Satyagraha*. Do not denigrate *Satyagraha* in that fashion. This *Satyagraha* is something unique. Martin Luther King, Nelson Mandela, and Lech Walesa all were enamored by this. Even the Chinese that individual who defied the tanks at Tiananmen Square in Beijing adopted this. It was *Satyagraha* straight. Gandhiji never retaliated and none of the true *Satyagrahi*'s ever retaliated in kind.

Finally, I would like to just say a few words about Nepal and Gandhiji since I am a Nepali. I must tell you something very interesting something very personal about Gandhiji's relationship with Nepal. We in Nepal knew then about the freedom movement of India. The Rana rule then was opposed to the Congress Party of India, but all our leaders of freedom were influenced by Gandhiji. Our leaders some of them had direct connection to Gandhiji. I will talk about just two persons in Nepal to show you the influence of Gandhiji on the highest and the lowest of the land. First, Maharaja Chandra Shamsher the dictator, the autocrat, who was everything opposite to Gandhi.

The enemy of Maharaja Shamsher in Nepal was the Congress Party. Second, Tulsi Mehar a simple unknown youth of sixteen or seventeen a member of the Arya Samaj. Propagating the Arya Samaj movement in Nepal then was a crime and since Mehar was involved in this, a case was filed against him. The case came up in front of Maharaja Chandra Shamsher and Tulsi was asked to choose between two penalties: imprisonment, or banishment from the country. Tulsi Mehar opted to be sent away from the country but he also wanted to learn a trade. Maharaja Chandra asked him, "What do you want to learn ? Where do you want to go "?

My grandfather was present at the meeting and recorded it in his auto biography. Maharaja Chandra Shamsher said, "Ram Mani, what does this lad want "? To this, Ram Mani said, "He wants to go to Gandhiji's Ashram in Sabarmati". An autocrat, Maharaja Chandra naturally considered Gandhi a danger. The Indian Congress Party was an enemy. Nevertheless in his wisdom and political acumen he sent him there and let him learn a trade. He also gave him a stipend. Tulsi Mehar also said, "I want to come back and bring the trade here". So, he went to Sabarmati Ashram. He went there and learnt the trade of *Charkha* weaving in which he became such an expert that people at the Ashram praised him a lot. Gandhiji came to know about him and he went to see his work. He saw that the Lad was sincere and devoted to work so from there he brought him to his house, as a personal attendant, where nobody could stay except his family. Tulsi Mehar becomes his *Hanuman*. Tulsi Mehar lived with him for four to five years. In July 1921 he entered the Ashram and on 28th December 1925, he left the *Ashram* of Gandhiji in Kanpur. In this period each day he was with Gandhiji, day and night. When Gandhiji went to the toilet at night he would be there with a lantern. That was the intimate relationship that he had. This is the love the common people of Nepal had for Gandhiji.

On one side, one can see the hidden influence Gandhiji had on a person like Chandra Shamsher, a dictator, and an oppressor, in whom, everything was opposite to Gandhiji. On the other hand was the manifest influence on people like Tulsi Mehar. Tulsi Mehar ultimately came back from Kanpur. What Gandhiji did for him ? He gave him two balls of cotton and eight hundred rupees and said, "I don't have more than this. Now go and spread the *Charkha* Movement in Nepal".

Mehar was stopped at the Raxaul border in Birgunj. He was asked to pay taxes on the cotton. Tulsi Mehar appealed to Gandhiji and Gandhiji telegrammed Chandra Shamsher. Chandra Shamsher the clever politician that he was immediately responded to the telegram and let the balls go free. Tusli Mehar later started an Ashram in Nepal known as Gandhi Ashram. This Tulsi Mehar an ordinary unknown person was molded by Gandhiji into the towering moral and ethical figure that he became, honored by one and all.

Tulsi Mehar virtually became Gandhi in his inner life. He was totally devoted to the ideas and ideals of Gandhiji till the end of his life. He ultimately received the Nehru Award. He was at the time medically in a very critical condition in hospital. He was my patient. We took him by ambulance to the Indian Embassy to receive the prize. Gandhi Ashram is still there. He came back from India with Gandhi's sandals—the wooden *kharau*—which is still being worshiped there.

Great people can do great things but true greatness is when great people mould simple ordinary beings into greatness. That was Gandhi and his moulding of Tulsi Mehar. This is what we must understand about the working of Gandhiji. Gandhiji wrote many letters to Tulsi Mehar from India. He asked, “Tulsi, are you taking milk ? Please take milk do not get sick”. Then he said, “How could you be sick ? I have told you so many things about health”. Then he adds, “Why haven't you written to me for so long a time “? Gandhiji also wrote to his other disciples and said, "Tulsi has not written anything to me; so what is wrong with him ? What happened to him “?

That is the concern of a great man for a most ordinary person who happened not even to be Indian. So this my friends, this is Gandhiji. If big ideas and big philosophies come down to the ground level, that is Gandhiji. That's how I understand Grandhiji. The Nepalese people know Gandhi's philosophy is alive in Nepal. He is also there physically at Tulsi's Gandhi Ashram for us and for the future generations. Tulsi Mehar, Gandhiji and the Gandhi Ashram will forever be close to our hearts in Nepal.

Einstein said, "Future generations will hardly ever believe that such a person as this in flesh and blood walked on this Earth" That is what we all think. I lived to hear the news of his death on the radio when I was small. Then I understood nothing, but Nepal knew even then that Gandhiji was a great soul. People like him come to earth rarely. His thoughts have spread universally. Now we must live those thoughts not in mere talks but in action.

Thank you very much.

**Rajendra Mahato**

नमस्कार,

आज के कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि–परराष्ट्र मंत्री सम्माननीय प्रदीप कुमार ज्ञवाली जी, जो अभी हमारे समक्ष प्रत्यक्ष तो नहीं हैं लेकिन प्रविधि के माध्यम से भावनात्मक रूप में हमारे साथ जुडे हुए हैं । भारतीय राजदूत महामहिम श्री विनय मोहन क्वात्रा जी, नेपाली कांग्रेस के नेता माननीय प्रकाशमान सिंह जी, डा. सुंदरमणि दीक्षित जी, भारतीय जनता पार्टी के परराष्ट्र संयोजक डा. विजय चौथाइवाले जी, कार्यक्रम उद्घोषक टीकाराम पौडेल जी, नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान, नेपाल के निर्देशक डा. दीपक कुमार अधिकारी जी एवं यहां उपस्थित संपूर्ण महानुभाव को मेरा सादर अभिवादन ।

सबसे पहले मैं कार्यक्रम आयोजक नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आपने ऐसे महान् विभूति–महात्मा के जन्म-जयंती के इस शुभ-अवसर पर ऐसा कार्यक्रम का आयोजन किया । वैसे तो २४ घण्टे उन्हें स्मरण किया जाता है । उनके विचार आज भी सारी दुनिया के लिए उतना ही प्रासांगिक हैं जितना उनके जीवनकाल में थे । उन्होंने विश्व शान्ति के लिए जो शान्ति और अहिंसा का रास्ता दिखाया वह सबके लिए अनुकरणीय है । उनके विचार आज भी दुनिया के लिए सांदर्भिक हैं । उनके विचार दुनिया में अमर हैं और सदा मार्गदर्शन के रूप में दुनिया को पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे । इस प्रकार उनके विचार समुद्र से पानी निकालने के बराबर हैं । उनके विचार इस दुनिया के लिए शान्ति के मार्ग पर तथा अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दे रहे हैं ।

गान्धी जी के लिए सत्य और अहिंसा महत्वपूर्ण थी । सत्य आत्मगत् होता है । व्यक्ति के प्रति की गई आस्था, जो ईश्वर के प्रति की गई आस्था के समान है और उस आस्था के विचार और व्यवहार से निर्देशित जो कर्म सामने आता है वह बिलकुल अहिंसात्मक होता है । उनका मानना था कि वहीं से सत्याग्रह कर्म के रूप में सामने आता है । सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और उसके बाद सर्वोदय, सबका भला, सबका उदय होता है । ऐसी महान् भावना के प्रेरक थे वे । इसलिए वो महात्मा थे । इसलिए सारी दुनिया ने उनको महात्मा माना । वो सारी दुनिया की सर्वोदय की बात करते थे, सबके कल्याण की बात करते थे यहाँ तक कि विपक्षियों की भी कल्याण की बात करते थे । विरोधियों की भी सर्वोदय की बात करते थे ।

वो स्वराज की बात करते थे । उनका मानना था कि बिना स्वराज के सर्वोदय सम्भव नहीं है । स्वराज अनिवार्य है । जब स्वराज की बात करते थे तब स्वदेश की बात करते थे, स्वदेशी की बात करते थे तथा स्वदेशवाद की बात करते थे । इसी विचार के तहत भारत में उन्होंने आन्दोलन किया था और इसी पर आधारित स्वदेशवाद को उन्होंने आगे बढ़ाया था । उन्होंने इस प्रकार से अर्थ-राजनीति को भी स्वदेशवाद से जोड़ा था । इस प्रकार से हम उनके विचार और आदर्श को जब राजनीतिक जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं तो सत्य, अहिंसा के रास्ते पर, सत्याग्रह के रास्ते पर और सर्वोदय के विचार को मानते हुए राजनीति करते हैं तथा स्वराज की भावना को आत्मसात् करते हैं । उन्होंने स्वदेशीभाव, स्वदेशवाद जैसे विचार को आगे बढ़ाया जो सारी दुनिया के लिए प्रेरणा का विषय बन गया । इसलिए गान्धीवाद में मनुष्य के लिए पूर्णता मिलती है । गान्धीवाद ऐसे विचार हैं जिसमें जीवन की पूर्णता दिखाई देती है । गान्धी को सारी दुनिया ने माना, उनके विचार को माना और उनके व्यवहार को माना । भारत में उनको 'राष्ट्रपिता' या 'बापू' तक का सम्मान मिला ।

जब हम गान्धी जी के विचार की बात करते हैं तो मुझे लगता है कि आज की युवापींढ़ीं के लिए उनके विचार बहुत ही आवश्यक हैं । जैसे डा. दीक्षित साहब ने बताया कि नेपाल में भी उनके विचार को हमने आत्मसात् किया । तुलसी मेहर तो गान्धी को ही अपना सबकुछ मानते थे ।

इस काल खण्ड में कहा जाय तो अहिंसा की राजनीति को गजेन्द्र बाबू ने शुरू किया था । मल्टि पार्टी डेमोक्रेसी आने के बाद अर्थात् १९९० के बाद मैंने गजेन्द्र बाबू के स्वामित्व में राजनीति शुरू की थी । तब मैंने अनुभव किया कि गान्धी जी के विचार नेपाल में कितना आवश्यक है । मैं एक घटना बताना चाहता हूँ । सन् २०१५ में नेपाल में पहचान और अधिकार की बात हो रही थी अर्थात् संघर्ष हो रहा था और आन्दोलन हो रहा था । तब नेपाल में जितने भी आन्दोलन हो रहे थे सब महत्वपूर्ण थे । २० दिन, २५ दिन, एक महिना से ज्यादा आन्दोलन हुआ । मधेश में जो आन्दोलन हो रहा था– सन् २०१५ की बात बता रहा हूँ– जब संविधान बन रहा था उस समय की बात मैं कर रहा हूँ । मधेश आन्दोलन में मैंने भी सोचा था कि १५-२० दिन में राज्य के साथ कोई बैठक होगी और आन्दोलन समाप्त हो जाएगा । लेकिन एक महिना हुआ आन्दोलन नहीं रुका, दो महिना हुआ आन्दोलन समाप्त नहीं हुआ, तीन महिना हुआ नहीं बन्द हुआ । आन्दोलन के क्रम में मैंने जनता के बीच में देखा कि आज की युवापींढ़ीं अहिंसा और शान्ति की बात न ही करती है और न ही वह सुननेवाली है । युवा जमात कहता है कि राज्य के विरुद्ध हमें तो बन्दूक उठाना पडेगा और हिंसा में जाना पड़ेगा क्योंकि दो महिना, तीन महिना हो गया और राज्य की तरफ से हिंसा बरकरार है । मैं आन्दोलन का नेतृत्व संभाल रहा था और मैं देख रहा था कि युवापींढ़ीं बिल्कुल हिंसा की बात कर रही थी । हमें बहुत कठिनाई हो रही थी उन्हें संभालने में । हमें युवापींढ़ीं को सम्झाने में गान्धी जी के विचारों को अपनाना पड़ा । हमें कहना पड़ा कि हिंसा समस्या का समाधान नहीं है । गान्धी जी ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चल कर इतनी बडी दुनिया को सिखाया । हम भी सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर अपनी बात को मनवा सकते हैं । तब मैंने यह अनुभव किया कि युवापींढ़ीं के लिए गान्धी जी के विचारों को आत्मसात् करना अनिवार्य हो गया है ।

गान्धी जी के विचार युगों-युग तक देश और दुनिया के लिए शान्ति और अहिंसा का एक प्रेरणा-स्रोत है । सारी दुनिया इस विचार का लाभ उठा रही है । भविष्य में भी इससे सारी दुनिया को लाभ मिलेगा । तो आज के इस अवसर पर गान्धी जी के प्रति और उनके विचारों के प्रति हम सारे शान्ति के रास्ते पर चलनेवाले, अहिंसा के रास्ते पर चलनेवाले– हम सभी नतमस्तक हैं । उनके विचार आज विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है । इसीलिए आज जो आपने कार्यक्रम का आयोजन किया वो बहुत ही ठीक समय पर किया है । मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

**Prakash Man Singh**

नमस्कार,

शान्ति एवम् अहिंसाका प्रतिमूर्ति महात्मा गान्धीजीको १५१ औँ जन्म जयन्तीको पूर्व-सन्ध्यामा आयोजना गरिएको आजको यो वेबिनारमा मलाई नीति अनुसन्धान प्रतिष्ठान, नेपालका निर्देशक दीपक कुमार अधिकारीज्यूले सरिक हुन अवसर दिनुभयो । यसका लागि म हृदयदेखि धन्यवाद व्यक्त गर्दछु । यस कार्यक्रमका प्रमुख अतिथि माननीय परराष्ट्रमन्त्री श्री प्रदीप कुमार ज्ञवालीज्यू, महामहिम भारतीय राजदूत श्री विनय मोहन क्वात्राज्यू, नेता श्री राजेन्द्र महतोज्यू, वरिष्ठ चिकित्सक तथा नागरिक समाजका अगुवा डा. सुन्दरमणि दीक्षितज्यू, भारतीय जनता पार्टीका विदेश विभागका संयोजक श्री विजय चौथाइवालेज्यू र आजको यो वेबिनारमा सहभागी भइरहनु भएका सम्पूर्ण आदरणीय महानुभाव ।

हाम्रा महान् व्यक्तित्व, विश्वलाई अहिंसा र शान्तिको माध्यमबाट तथा विश्वको जुनसुकै कुनाकाप्चामा किन नहोस् जनताले अहिंसात्मक आन्दोलनबाट, सत्याग्रहको माध्यमबाट अधिकार प्राप्त गर्न सकिन्छ भन्ने मार्ग देखाउनु हुने हाम्रा महात्मा गान्धीजीको १५१ औँ जन्म जयन्तीको पूर्वसन्ध्यामा म उहाँप्रति भित्री हृदयदेखि नै सम्मान प्रकट गर्दछु । हुन त गान्धी विश्व कै अत्यन्तै चमत्कारी व्यक्तित्व हुनुहुन्थ्यो । अत्यन्तै असल र ठूलो नेताको रूपमा विश्वले उहाँलाई चिन्ने गरेको छ, र आजको यो कार्यक्रममा गान्धीजीको बारेमा, उहाँको आयामको बारेमा बोल्न म चाहिँ कतिको सक्षम पात्र हुँ भन्ने म आफूलाई पनि

थाहा छैन । तर, कुरा के भने महात्मा गान्धीजीले नै देखाउनु भएको बाटो– अहिंसात्मक आन्दोलनमा, सत्याग्रहमा नेपालको यो परिवेशमा २०४२ सालको सत्याग्रहमा म स्वयं पनि देशमा प्रजातन्त्र पुर्नबहाली गर्नुपर्छ भनी सरिक भएँ । आन्दोलनका क्रममा म जेल गएको व्यक्तिको नाताले एउटा सत्याग्रहीको रूपमा गान्धीजीको बारेमा विषय राख्न पाउँदा यसलाई मैले एउटा ठूलो अवसरको रूपमा लिएको छु ।

गान्धीजीलाई दुनियाँले चिन्ने मुख्य कुरा के हो भने, मानव भएर जन्म लिएपछि संसारको जतिसुकै ठूलो शक्तिशाली शक्तिलाई पनि आफ्नो चरित्र र नैतिकतामा आधारित आन्दोलनले परास्त गर्न सकिन्छ भनेर उहाँले भारतीय स्वतन्त्रताको आन्दोलनबाट प्रदर्शन गर्नु भएको उदाहरण हो । गान्धीजीको नेपाल र नेपाली प्रतिको आस्था र विश्वास म भन्दा अगाडि बोल्ने विद्वान् दीक्षितज्यूले पनि उल्लेख गरिसक्नु भएको छ । सन् १९२१ मा तुलसी मेहर श्रेष्ठज्यूले स्वामी दयानन्द सरस्वतीको सत्यार्थ प्रकाश अध्ययन गरेर मदिरापान एवं मांसाहारको विरुद्धमा अभियान चलाएका कारण त्यस समयमा उहाँलाई १२ वर्षको कैद सजाय गरिएको थियो । त्यो चन्द्र शमशेरको शासनकाल थियो । यो सन् १९२१ को कुरा हो । उहाँलाई देश निकाला गरेपछि गान्धीजीको साबरमति आश्रममा चार वर्षसम्म सहयोगीको रूपमा गान्धीजीको अत्यन्त नजिक भएर काम गर्ने अवसर उहाँलाई प्राप्त भएको थियो । यस कारणले गर्दा, तुलसी मेहर श्रेष्ठज्यू कै माध्यमबाट गान्धीजीलाई नेपाल र नेपालीको अवस्था र व्यवस्थाको बारेमा जानकारी भएको थियो । तुलसी मेहरज्यूले आफ्नो संस्मरणमा एक ठाउँमा के भन्नुभएको छ भने त्यसबेला भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनमा लाग्ने नेताहरू गोर्खालीहरूसँग डराउने गर्थे । त्यसमा गान्धीजीले नै स्वतन्त्रताको आन्दोलनमा लागेका नेताहरूलाई भन्नुहुन्थ्यो, 'यो जुन मनको भय छ यसलाई हटाउन सक्नुपर्छ । हामीले गोरा छाला भएकाहरूसँग चाहिँ नडराइकन आन्दोलनमा लागिरहेका छौं भने गोर्खाली त झन हाम्रै भाइहरू हुन् । यी गहुँगोरा गोर्खालीहरूसँग हामी किन तर्सनुपर्छ र ! यी त हाम्रै बन्धुहरू हुन् ।' उहाँले यसरी भन्नुभएको कुराबाट गान्धीजीको नेपाल र नेपालीप्रतिको आस्था र विश्वास कतिको रहेछ भन्ने कुरा हामीले सजिलै अनुमान गर्न सक्छौं ।

अर्कोकुरा, गान्धीजीको १५१ औँ जन्म-जयन्तीको पूर्वसन्ध्यामा यो वेबिनार आयोजना भइरहेको कारणले गर्दा नेपालको सन्दर्भमा सन् १९४७ मा मेरा पिताजी गणेशमान सिंहज्यू र कृष्णप्रसाद भट्टराईज्यूले कलकत्ताको बिडला धर्मशालामा गान्धीजीसँग भेट गर्नुभएको थियो, त्यो एउटा घटनालाई म यहाँ राख्न चाहन्छु । पद्म शमशेरको शासनकालमा त्यसबेला विश्वेश्वरप्रसाद (वी.पी.) कोइराला चाहिँ जेलमा हुनुहुन्थ्यो । उहाँ क्यान्सरबाट पीडित भएको कारणले गर्दा उहाँको जीवनले नै कुन दिन प्राण त्याग्ने हो भनी अनिश्चित भइसकेको थियो । नेपाली कांग्रेसले तत्काल निर्णय गरेर गणेशमान सिंह र कृष्णप्रसाद भट्टराईज्यूले गान्धीजीसँग भेटेर वी.पी. कोइरालालाई क्यान्सर भएको हुनाले उपचार गर्नको लागि रिहा गर्न भनी अनुरोध गर्दै पद्म शमशेरलाई एउटा चिट्ठी लेखाउने जिम्मेवारी दिएको थियो । त्यही क्रममा उहाँहरू जानुभयो । सन् १९४७ मा गान्धीजीको अत्यन्तै व्यस्त जीवनशैली थियो । त्यति हुँदा पनि डा. राम मनोहर लोहियाजीको सुझावमा गान्धीजीलाई पहिला नै खबर गरिएको रहेछ । त्यहाँ राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय पत्रकारहरूको भीड भएको हुनाले आधा घण्टा जति कुर्नुपर्ने भएछ । अनि आधा घण्टापछि चाहिँ उहाँहरूलाई बोलाइयो र गान्धीजीसँग भेटघाट भयो । सुरुमा त्यहाँ नेपालको अवस्था बारेमा चर्चा भयो । त्यसपछि वी.पी. कोइराला क्यान्सरको बिरामी हुनाले उहाँलाई अत्यन्तै गाह्रो भइरहेको जनाएर उहाँलाई रिहा गर्नको लागि तपाईंहरूले (तत्कालीन भारतीय नेतृत्वले) नेपालको तत्कालीन सरकारलाई अनुरोध गरिदिनुपऱ्यो भनेर हाम्रो पार्टीको तर्फबाट हामी आएका छौँ भनी उहाँहरूले बापूजीलाई भन्नुभयो । बापूजीले केही बेर सोचेर सोध्नुभएको रहेछ– 'म पत्र त लेखिदिउँला, तर उता कसले पुऱ्याउँछ ?' अनि कृष्णप्रसाद भट्टराईजीले 'म नेपाल जान्छु म पुऱ्याउँछु' भन्नुभएछ । 'ठीक छ त म एउटा पत्र लेखिराख्छु भोली फेरि एक चोटि चाहिँ आउनुपर्ला, आज त म अलमलमा छु,' भनी बापूजीले भन्नुभयो । यति भनिसकेपछि पनि एक चोटि फेरि उहाँले आफ्ना सचिव प्यारेलाललाई बोलाएर भन्नुभयो, 'एउटा टेलिग्राम तार चाहिँ नेपालमा पठाउँनु, मेरो पत्र लिएर कृष्णप्रसाद भट्टराई आउँदै छन् भनेर' । त्यसपछि पिताजीहरू बिदा भएर आउनुभयो । भोलिपल्ट जादाँखेरि पनि गान्धीजी अत्यन्तै व्यस्त हुनुहुँदो रहेछ । एकदिन अगाडि चिट्ठी लेख्छु भन्नुभएको थियो तर उहाँले चिट्ठी लेख्न भ्याउनु भएको रहेनछ । अनि त्यसबेला गान्धीजीले एकदमै

लाज मानेर बिन्ती गरेर 'एकछिन् बस्नुस म पत्र लेख्छु' भन्नुभएको थियो । यो संस्मरण मेरा पिताजी गणेशमानजीले 'मेरो कथाका पानाहरू'मा एकदम विस्तृतमा वर्णन गर्नुभएको छ । त्यसैबेला गणेशमानजीले भन्नुभयो, 'हैन बापूजी, तपाईंको तार (टेलीग्राम) त्यहाँ पुग्नासाथै वी.पी. कोइरालालाई रिहा गरियो ।' यो कुरा सुनेर गान्धीजी एकदमै आश्चर्य भएर 'ए होर ! मेरो तार पुग्दैमा उहाँ रिहा हुनुभयो र ?' भन्दै हाँस्नु भएछ । अब चिट्ठी लेख्नै परेन, त्यसपछि फेरि गान्धीजीले 'वी.पी. को स्वास्थ्य ख्याल राख्नुभनी मेरो सन्देश पठाइदेऊ' भन्नुभएको रहेछ । पछि उठ्ने बेलामा चाहिँ गणेशमानजीलाई देखाएर राम मनोहरजीले भन्नुभएछ– 'गणेशमान सिंहजी, तपाई आफ्नो देश र जनताको लागि धेरै कष्टहरू उठाइरहनु भएको छ भन्ने मलाई थाहा छ । मेरो आशीर्वाद छ । एकदिन तपाईंको जुन लक्ष्य हो त्यो लक्ष्य अवश्य पूरा हुनेछ ।' यो आशीर्वाद आफूलाई मात्र होइन सबै नेपालीलाई उहाँले दिनुभएको हो भनी यो कुरा उहाँले लेख्नुभएको छ र, मेरा पिताजीले २०४६ सालको जन-आन्दोलनको सर्वोच्च कमाण्डरको हैसियतले आन्दोलन आरम्भ गर्नुभयो ।

आन्दोलन सफल भइसकेपछि पनि उहाँले धेरै पटक भन्नुभयो– 'मैले प्रधानमन्त्रीको पद त्यागेको गान्धीजी बराबर हुन कदापी होइन है । गान्धीजीले त्यो जमानामा जुन आशीर्वाद दिनुभएको थियो त्यही कारणले आज बहुदलीय व्यवस्था पूर्णरूपमा लागू भएको छ । त्यसको ऋण तिर्नका लागि मात्र मैले पद त्यागेको हुँ ।' उहाँले बारम्बार निरन्तर हामीलाई भनिराख्नु हुन्थ्यो ।

संसारलाई अहिंसाको मार्ग–सत्याग्रहबाट जनतालाई मुक्ति दिलाउने, प्रजातन्त्र दिलाउन सक्ने आन्दोलनको जुन मार्ग प्रशस्त गर्ने, देखाउने गान्धीजीको नेपालप्रतिको यत्रो आस्था र विश्वासलाई ध्यानमा राखेर हामी सबैले गान्धीजीको जन्म जयन्तीको अवसरमा आउँदा दिनहरूमा नेपाल र भारतको हाम्रो सम्बन्धलाई अत्यन्तै समझदारीका साथ, सुझ-बुझका साथ विस्तार गरेर अगाडि लग्यौं भने माहात्मा गान्धीजीलाई पनि हामीले सच्चा सम्मान प्रकट गरेको हुनेछ भन्ने मलाई लागेको छ । म यती भन्दै पुनः एकपटक तपाईंहरूले यो अवसर दिनुभयो त्यसको लागि धन्यवाद ।

जय नेपाल !

**Dr. Vijay Chauthaiwale**

Namaskar,

Minister of Foreign Affairs, Government of Nepal Shri Pradeep Kumar Gyawaliji, His Excellency India's Ambassador to Nepal Shri Vinay Mohan Kwatraji, Shri Rajendra Mahatoji, Shri Prakash Man Singhji, Dr. Sundar Mani Dixitji, The anchor of this wonderful event Dr. Tikaram Poudelji, and all the officials of Neeti Anusandhan Pratishthan, Nepal.

It is a great honor for me to be with you all on this auspicious occasion to celebrate the 151st birth anniversary of the greatest person of previous century, Mahatma Gandhi, who is still remembered all over the world. As Dr. Sundar Mani Dixit said the great scientist Albert Einstein has made a comment on Gandhiji: 'Generations to come, it may well be, will scarce believe that such a men as this ever in flesh and blood walked upon this Earth.' Gandhiji's contribution is so enormous that it is very difficult to comprehend it in one speech. If we study him for the entire life, there will still be something more which will be left to be understood about Gandhiji because his life, his philosophy and so many facts and dimensions he had. He was not only a freedom fighter but also the one who gave *tatvo gyan* on the philosophy of life–on how to behave. He has his own moral and ethical standards. He also had his own economic theory. He has his own social theories too. All of us may not agree with whatever he said, but such a vast and diverse thinking a

single person can have is indeed difficult to conceive. As people have already said, there were some brilliant features of Mahatma Gandhiji's philosophy. First is of course truth and non-violence. These are the cardinal principles of Gandhian thought(s), as Gandhiji used to say truth is relative but truthfulness in the world is the absolute truth and the ultimate hearing. This ultimate truth is God. God is the only truth and moral laws.

His second principle was that of non-violence. It is in par with peace, and indicates absence of violence. Mahatma Gandhi understood it as love, i.e., an integral part of this philosophy of non-violence. Similarly, the third principle of Gandhiji is *Satyagraha,* for *Satyagraha*, he mobilized the masses against the British rule but did not make *Satyagraha* only a political tool or a political movement against the foreign regime. He has converted it into a philosophy and his philosophy of *Satyagraha* is adopted by many people all over the world even today. His idea of *Sarvodaya*, in the same sense as our party is talking about *Antyodaya*, essentially means the well-being of everyone, not only in materialistic term but also in terms of health, happiness and spirituality.

The fourth principle was that of *Swaraj*, and enough has been talked about it. It is not only about a rule by our own people; it is also based on our own values, culture and *Sanskara*. One important part of Gandhiji's concept was trusteeship. Trusteeship is a socio-economic philosophy where people who have enough wealth, or create wealth share their wealth, and therefore, there is equitable participation among all the stake holders. He has also talked about the *Swadeshi*; about which I don't need to talk much here. It has an international influence which is the main theme today in the seminar.

I don't have to name people like Martin Luther King and others, who had been greatly influenced by the Gandhian philosophy of non-violence and *Satyagraha*. They have effectively used these tools in their struggle in favor of the oppressed and the suppressed class. In the case of Sir Martin Luther King as well as Nelson Mandela, right down to Abdul Khan and others have been very much impressed by Gandhian thoughts.

European Author Romain Rolland discusses Gandhi in his 1924 book *Mahatma Gandhi: the man who became one with the Universal being* and Brazilian anarchist and Positive Feminist Maria Lacerda de Moura wrote about Gandhi in her work on pacifism. The influence of Gandhiji was also seen in European physicist Albert Einstein, whom I have already quoted. Barack Obama, former United States (US) president, also spoke about Gandhiji's influence in 2009 replying to a question: "Who is one person, dead or alive, that you would choose dying with ?" He referred to the name of Mahatma Gandhi.

Gandhian principle is, therefore, of immense importance in the present context. For example, trust has the core of Gandhian philosophy is very much relevant in today's context. His teaching of non-violence and compassion for the oppressed and suppress class requires a new energy in the current ways of conflict. He also was very much keen on the decentralization of power. He developed a concept of *Gram Swaraj* where the ownership of the *gram* or a village is with the villagers, and therefore, they work as semi-autonomous bodies which take care of the needs and well-being of the people themselves.

Many other aspects of Gandhiji's initiatives, like *Swachchhata* are now being implemented by Prime Minister Narendra Modiji by launching the *Swachchhata Abhiyan* and it has been given great importance in a current BJP-led government of India. So, in all these respects, I would like to re-emphasize that Gandhiji's thoughts are much reliable, and we all need to revisit them, evaluate them and adopt them in the present context. Therefore, following them will be the greatest tribute to this great leader.

Once again, I thank the organizer for inviting me here, and wish you all the best. We wish that India-Nepal relations will grow from strong to stronger in all the circumstances.

*Dhanyavad !*

**Deepak Kumar Adhikari**

नमस्कार,

आज के कार्यक्रम के सञ्चालक डा.टीकाराम पौडेलजी और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय परराष्ट्रमन्त्री श्री प्रदीप ज्ञवालीजी और इस कार्यक्रम के सभी विशिष्ट अतिथि, भारत के महामहिम राजदूत श्री विनय मोहन क्वात्राजी, अन्य वरिष्ठ नेतागण और दूर होते हुए भी तकनिकी माध्यम से जुड्ने के कारण श्री विजय चौथाईजी के साथ भी हम साक्षात्कार कर पाए । इस कार्यक्रम में आप सभी को मैं आयोजक के तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद और साधुवाद व्यक्त करता हूँ । बहुत कम समय में आप सभी वरिष्ठ, समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, भारतीय राजदूत, परराष्ट्रमन्त्री जी, डाक्टर साहब, आदरणीय प्रकाशमानजी और श्रीमान राजेन्द्र महतोजी ने हमारे निमंत्रणा को स्वीकार करके कार्यक्रम की गरिमा बढाई है । इतने कम समय में आपने यहाँ हम सब के लिए विचार प्रस्तुत किया । एक विमर्श के नाते हम सब के लिए अनुभव आप लोगों ने यहाँ प्रस्तुत किया । आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

कोरोना के इस प्रतिकूल परिस्थिति के कारण हम यहाँ कम संख्या में उपस्थित हो पाए । इस कार्यक्रम के सन्दर्भ में जब एक महिना पहले हम लोग विचार कर रहे थे तो हमारा अनुमान था कि सायद हम प्रत्यक्ष कर पाएंगे, उस समय तक यह परिस्थिति कुछ अनुकूल बनेगी । लेकिन ऐसा नहीं हुआ तो इस तकनिकी के माध्यम से भी हम कार्यक्रम से जुडे । कार्यक्रम में अपने नीति के जो टोली, इस

में प्रयासरत थे, वे सब लोग भी उपस्थित रहे । दूतावास के सभी अधिकारीयों ने भी इस कार्यक्रम के सन्दर्भ में समय समय पर उचित सहयोग देते रहे और राजदूत महोदयजी का तो विशेष मार्गदर्शन मिलता रहा । आप सब लोगों ने समय-समय पर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में एक अच्छा सामूहिक प्रयास किया है । अंग्रेजी में कहूँ तो Finishing का प्रयास ठीक से हुआ है । आप सभी को धन्यवाद व्यक्त करता हूँ ।

गान्धीजी के बारे में मैं दो बिन्दु यहाँ उल्लेख करना चाहूंगा जो अपने जीवन में हमेसा मैंने उनके जीवन से प्रेरणा ली है । सामान्य रूप से जब हम किसी भी महापुरुष का जन्म-जयन्ती और पुण्य-तिथि दोनों का स्मरण करते हैं, तो भौतिक शरीर से हमारा उनका मिलना सम्भव नहीं है । परन्तु उनके जीवन के बारे में जब हम विचार करते हैं तो हम उनके जीवन के जो कुछ अच्छे कार्य हैं जो समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, स्वयं व्यक्तिगत जीवन के लिए हितकर हैं और उनका जो योगदान है वह स्मरण करने से हमें साल भर कार्य करने के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है । इसलिए हम स्मरण करते हैं महापुरुष के जीवन को । उनके जीवन के कई आयाम रहते हैं । शुरू में टीकारामजी ने उल्लेख किया था जब गान्धीजी वैरिस्टर पढने के लिए जा रहे थे तब उनकी माताजी उनको अनुमति नहीं दे रही थी । शर्त एक ही थी कि आप मांस नहीं खाओगे तो मैं जाने दुंगी । तो गान्धी जी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं मांस नहीं खाऊंगा । तब माताजी ने अनुमति दी । पानी के जहाज में लोगों ने कितने प्रयास किए उनको कई प्रकार के मांस खिलाने के लिए । लेकिन गान्धीजी ने संकल्प किया था कि मैं माता जी के सामने संकल्प करके आया हूँ । मैं जीवन के किसी भी कठिन से कठिन परिस्थिति में भी इस प्रतिज्ञा को नहीं तोडूंगा । तो यह सामान्य नागरिक के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है ।

दूसरी बात, जब हम पाँचवी कक्षा में थे तो हम ने पढा था Imitating the English Gentleman. गान्धी जी प्रयास करते थे कि हम बाहर से कैसे अन्य लोगों की तरह, अंग्रेजों की तरह दिखें । तो अन्त में जब उन्होंने स्वयं के अन्दर झाँककर देखा तो उनको लगा कि बाह्य नकल कब होता है ? जब व्यक्ति अन्दर से कमजोर होता है तब बाह्य नकल करता है । यही बात देश के लिए भी लागू

होता है और समाज के लिए भी । इसलिए उन्होंने सब-कुछ त्याग करके अपना *'स्व'* को जागरुक किया । वह *'स्व'* क्या था उनका ? *–भगवद्गीता ।* इसलिए उन्होंने अपने हाथ में *भगवद्गीता* को लेकर के भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया । यह *'स्व'* की जागृति क्या है ? –व्यक्तिको जाँचना चाहिए कि अपने अन्दर कौन सी शक्ति है और कौन सी कमजोरी है । और यह समाज और राष्ट्र के लिए भी लागू होता है । उसी को हम *चिति* भी कहते हैं । देशकी *चिति* को सम्झना चाहिए, देश के मूल स्वभाव को समझना चाहिए । जब उस देश के नागरिक, उस देश के नेतृत्वकर्ता *'स्व'* को पहचानेंगे, अपने *चिति* को, मूल तत्व को पहचानेंगे तो देश आगे बढेगा । यह गान्धीजी का मुख्य सन्देश था । इसलिए गान्धीजी के जीवन के बारे में जो मैं स्वयं अपने जीवन में सिखा हूँ मुख्य रूप से यही है ।

आज हम इस कार्यक्रम में कोंरोना के महामारी के प्रतिकूल परिस्थिति में भी उपस्थित हुए हैं । एक बार फिर सभी को धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ । हमारी इच्छा थी कि कई अपने शुभचिन्तक जो नीति से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जुडे हैं उन सबका एकत्रिकरण हो । लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हुआ । किन्तु हमें विश्वास है कि आगे आनेवाले दिनों में जब समय अनुकूल बनेगा तो हम सब किसी न किसी कार्यक्रम के माध्यम से अवश्य एकत्रित होंगे । और आज उनकी अनुपस्थिति के कारण हम सब सामूहिक रूप से उसका आनन्द तथा लाभ नहीं ले पाए । जो भी हो, आप सभी को पुनः धन्यवाद व्यक्त करता हूँ । आदरणीय सूरज वैद्यजी और डा. वासुदेव कृष्ण शास्त्रीजी का भी यहाँ आना हुआ, उनका भी साधुवाद । इस वेबिनार संचालन की व्यवस्था में तकनिकी क्षेत्र के ज्ञाता, कार्यकर्ता और अन्य अपने टोली के सभी कार्यकर्ताओं को भी पुनः एक बार धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ ।

बहुत-बहुत धन्यवाद ।